International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 5, May- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

"राजस्थानी लोकगीतों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर भाषा और सांस्कृतिक संवेदनशीलता के विकास का अध्ययन"

अभिषेक गोयल

शोधार्थी, शिक्षा विभाग

टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगरए राजस्थान

शोध पर्यवेक्षक

प्रोफेसर (डॉ.) राजेन्द्र कुमार गोदारा

शिक्षा विभाग

टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगरए राजस्थान

सार

भारत की संस्कृति व सभ्यता विष्व में सबसे प्राचीन है। हमारे देष का अधिकतर भाग ग्रामीण क्षेत्र है। प्राचीन सभ्यता तथा आदर्ष, संस्कृति ग्रामीण क्षेत्र के लोगों में ही देखने को मिलती है तथा प्राचीन सभ्यता तथा आदर्ष के बचे हुए स्मारक चिन्ह लोकगीतों में सुरक्षित हैं। आज पष्चिम से आये हुए आचार–विचार तथा वेष–भूषा के झोंके से यह भय है कि कहीं हमारा पुराना सामाजिक जीवन लुप्त न हो जाये और हम लोग स्वयं एक कृत्रिमता–पूर्ण सभ्यता के वेग में पड़ कर कृत्रिम और नीरस न बन जाये। ये लोकगीत ही हमारे जातीय जीवन अर्थात् समान रूचि समूहों को तथा हमारे दिलों को सरस बनाते हैं।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति व सभ्यता विष्व में सबसे प्राचीन है। हमारे देष का अधिकतर भाग ग्रामीण क्षेत्र है। प्राचीन सभ्यता तथा आदर्ष, संस्कृति ग्रामीण क्षेत्र के लोगों में ही देखने को मिलती है तथा प्राचीन सभ्यता एवं आदर्ष के बचे हुए स्मारक चिह्न लोकगीतों में सुरक्षित हैं। आज पष्चिम से आये हुए आचार–विचार तथा वेष–भूषा के झोंके से यह भय है कि कहीं हमारा पुराना सामाजिक जीवन लुप्त न हो जाये और हम लोग स्वयं एक कृत्रिमता–पूर्ण सभ्यता के वेग में पड़ कर कृत्रिम और नीरस न बन जायें। ये लोकगीत ही हमारे जातीय जीवन अर्थात् समान रूचि समूहों को तथा हमारे दिलों को सरस बनाते हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 5, May- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

हमें संस्कृति का अध्ययन करने के लिए प्राचीन लोक साहित्य के साथ–साथ लोकगीतों का अध्ययन करना होगा। राजस्थान की लोक संस्कृति अपने आप में एक अनूठी पहचान रखती है। धर्म, पहनावा, रीति–रिवाज, पारिवारिक सम्बन्धों की जानकारी हमें लोकगीतों से ही मिलती है – यथा सर्दी, गर्मी, वर्षा, वर्ष भर के त्योहार, त्योहारों के उद्देष्य व उनसे होने वाले लाभ, त्योहारों पर पहनने वाले वस्त्र व खान–पान व उनका क्या महत्त्व है ? यह सब हम लोकगीतों से ही जान पायेंगे। माता–पिता का आदर, सास–ससुर, पति–पत्नी, साला–साली आदि के सम्बन्ध भी लोकगीतों से उजागर होते हैं। पुत्र–जन्म तथा विवाह–उत्सव की परम्पराएं इन लोकगीतों के बिना अधूरी हैं।

हमें अपनी संस्कृति, सभ्यता, परम्पराओं का ज्ञान, पारिवारिक रिष्ते, रिष्तों का महत्त्व, रिवाजों आदि का महत्त्व जानना है तथा ये लोकगीत कब व क्यों मनाये जाते हैं ? इन सब प्रष्नों का उतर जानना है तो हमें ग्रामीण क्षेत्र के लोकगीतों का अध्ययन करना पड़ेगा। लोकगीतों के अन्तर्गत रातीजगा, पुत्र–विवाह, पुत्र जन्म, जापा, जंवाई, भात, होली, दीपावली आदि गीतों का अध्ययन करना होगा। अन्यथा आने वाली पीढ़ी अपनी संस्कृति, सभ्यता को भूलती जायेगी। अतः हमें चाहिए कि आज विद्यार्थियों को घर के साथ–साथ स्कूलों में अपनी प्राचीन लोक–संस्कृति व सभ्यता की जानकारी दें। विद्यार्थियों को सभी विषयों के साथ लोक–संस्कृति का विषय भी पढ़ाया जाये ताकि बालक–बालिकाएं अपनी संस्कृति से जुड़े रहें और अपने बड़ों का आदर–सत्कार करें तथा अपनी लोक–संस्कृति को आगे बढ़ाने का कार्य पूर्ण रूप से करें।

षिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जो विद्यालय सीमा के बाहर एवं अन्दर अग्रगामी विचरणषील है। विद्यालय समय में बालक जितना षिक्षित होता है उसकी परिणति समाज में ही व्यवहृत होती है। षिक्षा के दो पक्ष महत्त्वपूर्ण हैं, सभ्यता निर्माण एवं संस्कृतीकरण।[1] बालक का संस्कृतीकरण उसकी संस्कृति द्वारा ही संभव है, जो समाज में स्वतः एकमात्र रूप से प्राप्य है। समाज में बालक का यह सांस्कृतीकरण अर्थात् उसे सुसंस्कृत बनाने का कार्य सामान्य जन या लोक करते हैं, जिनके मुख्य उपकरण लोकगीत, लोक कहावतें आदि है। किन्तु इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण षिक्षा उपकरण लोकगीत हैं, अतः लोकगीतों द्वारा बालक को षिक्षित करने का कार्य प्राचीनकाल से हो रहा हैं।

राजस्थानी भूमंडल एक ऐसा प्रांत है, जिसका साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व संपूर्ण भारत में अद्वितीय रहा है। यहाँ की सांस्कृतिक परंपरा अत्यन्त प्राचीन, समृद्ध एवं वैभवषाली रही है। सौन्दर्यानुभूति को व्यक्त करने के अनेक साधन यहाँ युगों से अनुप्रयुक्त रहे हैं। सैकड़ों वर्षों से संस्कार एवं संघर्षपूर्ण लोकषिक्षा का पथ राजस्थानी साहित्य में प्रारंभ से ही अद्वितीय रहा है। अतः प्रांतीय लोकगीतों की अपेक्षा यहाँ अधिक वैविध्य, रंगीलापन एवं सरलता व सादगीपूर्ण ढंग से बालक को षिक्षित करने की परम्परा अधिक रही है। यहाँ की विषिष्ट भौगोलिक, ऐतिहासिक और सामाजिक परिस्थितियों से प्रेरित होकर जब राजस्थानी महिलाएँ अपनी रंगबिरंगी गोटे–किनारे की राजस्थानी वेषभूषा में सुसज्जित होकर लोकस्वर उभारती हैं तो बालक का सांस्कृतिकीरण एवं सामाजिकीरण स्वतः ही होता चला जाता है। राजस्थान में अनेक व्यावसायिक जनजातियाँ (लंगा, जोगी, मिरासी, नट, भील, गरासिया आदि) भी लोकगीत गाने का कार्य करती हैं। कई लोकगीत अलग–अलग जातियों के गायकों द्वारा अलग–अलग लय एवं स्वरों से, जबकि कई समान लय एवं स्वरों से भी गाए जाते हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 5, May- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

षिषु के जन्म से लेकर विवाह तक, विवाह से मोक्ष तक लोकगीतों द्वारा षिक्षा–प्रवाह निरन्तर होता रहता है। राजस्थानी लोकगीतों में सर्वाधिक संख्या संस्कार, त्योहार व पर्वों के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों की है। सोलह संस्कारों में भी सर्वाधिक संख्या जन्म एवं विवाह संस्कार के गीतों की है। इन संस्कारों को कई दिन तक मनाया जाता है। अतः गीत भी कई दिनों तक कई प्रकार के गाए जाते हैं। इन्हीं गीतों में षिक्षा प्रक्रिया को ढूंढने का विनम्र प्रयास किया गया है।

राजस्थानी लोकगीतों में षिक्षा की प्रक्रिया जन्म से पूर्व ही गर्भवती को 'जच्चा रा गीत' सुनाकर प्रारंभ की जाती है। इसमें प्रमुख रूप से देवी–देवताओं की प्रार्थना द्वारा धार्मिक षिक्षा, पुत्र होने पर उसे शूरवीर बनने की षिक्षा एवं पुत्री होने पर समाज में उपेक्षित दृष्टिकोण होते हुए भी संघर्ष द्वारा अपना स्थान बनाने की षिक्षा प्रदान करने का प्रयत्न किया जाता है। जैसे प्रस्तुत गीत में प्रसूता द्वारा भैरव से पुत्र–प्राप्ति की कामना की गई है, जिससे उसे भी शूरवीर की माँ होने का गौरव प्राप्त हो सके –

''सासू तो कैवे म्हारी बहवड़ बांझड़ी

परणियौ लावै ल्योड़ी सौक

अेकलियै रा सीरी चढ़ती असवारी हैलौ सांभलो

भैरूंबाबा कदैयन भीजी दूधां कांचली

कालूड़ा कदैयन कांधै टपकी लाल

कासी रा बासी अमर बंधा दौ नी जुग में पालणौ

देराणी जीठाणी बोलै अंवला बोल

ज्यांरै हींडै पूतज पालणै

कासी रा बासी पुतर बिन बाजूं म्हैं कुल में बांझड़ी

म्हैं भी वीर री मां कहास्यूँ, पुतर दे भैरूंबाबा।[2]''

पुत्र प्राप्ति पर राजस्थानी महिलाएं पीला ओढ़ने के प्रति अत्यंत लालायित रहती हैं क्योंकि सामाजिक दृष्टिकोण से भी पीला ओढ़ना प्रतिष्ठापूर्ण कृत्य माना जाता है। इसके साथ लोकगीत द्वारा बालक को चाची–ताई एवं चचेरे भाइयों के प्रगाढ़ संबंध का अहसास भी कराया जाता है, जैसे प्रस्तुत गीत में –

''गाढ़ा मारू म्हाणै पीलौ दो रंगाये

जेठाण्यां, देराण्यां पीला रा बेस

धण रै ई पीलौ लावज्यौ जी म्हारा राज

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 5, May- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

देराण्यां जेठाण्यां जाया लाडल पूत

कोई थे जण जाई धीवड़ी जी म्हारा राज।

भाया, काकी आपणै पुतर जुं

लड़ करे ज्यूं एक खेत का सट्टा पीलौ

म्हने ल्या दे पीलौ बेस म्हारा राज।[3]''

राजस्थान में सर्वाधिक उल्लासपूर्ण संस्कार विवाह है, जिसमें गाये जाने वाले गीतों में विवाह तिथि निष्चित होने पर ''सावा झेलणै'' विनायक को अनुष्ठानित करने हेतु लोकगीत गाए जाते हैं। इन गीतों में गणेष अर्थात् बुद्धि को मनुष्य का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण गुण सिद्ध करके व्यक्ति को धार्मिक रूप से बुद्धि प्राप्त करने की मन्नत की जाती है, जिसके बल पर यह उत्सव निर्विघ्न संपन्न हो जाये, जैसे –

''अेक सौ पान सुपारी डौढ़ सौ

जी ओ म्हे दीनो विनायक जी नै नैवतौ

जी ओ म्हारा काज सुधारण बैगा आवजो।[4]''

यूँ तो राजस्थान में विवाह की प्रत्येक रस्म में गीत का रिवाज है किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण है ''मायेरो''। इसमें एक गीत है जिसमें भाई–बहन के अनन्य प्रेम की व्याख्या करके सामाजीकरण को सुदृढ़ बनाया गया है –

''बीरा रे अेक बड़लौ नै दूजी पींपली

ज्यारां पान सवाया होय

माँ री जाई सूँ कांई रूसणौ

एक बीरौ दूजी बैनड़ी

ज्यारां हेत सवाया होय

जामंण रे जाई सूँ कांई रूसणौ।[5]''

राजस्थान में त्योंहारों के उपलक्ष्य में भी सौन्दर्य निर्माण, प्रतिष्ठा प्राप्ति लोकहित में सर्वोत्सर्ग आदि की परीक्षा दी गयी है – जैसे गणगौर, आखातीज, श्रावण की तीज, राखी, दषहरा, दीपावली, संक्रान्ति, होली आदि। स्त्रियों द्वारा सौन्दर्योपासना भी गीत में की गयी है –

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 5, May- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

''खेलण दो गणगौर भंवर म्हानै पूजण दौ गिणगौर

हो जी म्हारी संज्या जोवै बांट

भंवर म्हानै खेलण दौ गिणगौर

माथै नै मैंमद लाव, भंवर म्हारै हिवड़ै हांस घड़ाय

ओ जी म्हारी रखड़ी रतन जड़ाव

भंवर म्हानै खेलण दौ गिणगौर

ओ जी गौरी म्हानै चंदिया बणावै, निखरै म्हानै

म्हानै खेलण दौ गिणगौर।[6]''

छोटी लड़कियां आखातीज के दिन, जो कि आमजन का पर्व है, दूल्हा–दुल्हन बनकर गीत गाती हैं एवं वैवाहिक जीवन में उल्लास भरने का प्रयत्न करती हैं –

''आखा तीज रौ आखौ खीच, गलवाणी सूं मीठौ खीच

धान धणैरौ देवौ वीर, रिपिया रो म्हे करसां सीर

बींद–बींदणी मांगे आज, कम देता थानै क्यूं नहीं आवै लाज

बींदणी नै गाबा दिराय, बींद रै थे साफो बंधाय

बींद–बींदणी खुस रैवै आज, दे दीज्यौ म्हानै ताज।[7]''

श्रावण मास में बादलों की सघन घटाओं में राजस्थानी नारियों का प्रेमोत्सव में डूबकर रिमझिम वर्षा ऋतु में यौवन और रूप की मस्ती में प्रियतम के प्रति राग का वर्णन ''हिण्डौला गीत'' में मिलता है, जिससे दाम्पत्य जीवन में उल्लास का संचार होता है–

''बन खण्ड में हिण्डौलो मांडयो, रेसम री पट डोर

राणी–राणा दे हीण्डा बैठ्या धरती झैले न भार ओ जी

धरती झैले नै भार .....

सूरज जी ए ललकारौ दियो, ओ हीण्डो गयो गिरनार

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 5, May- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

धरती झैले नै भार[8] .....''

अध्ययन के उद्देष्य

1. राजस्थान में प्रचलित लोकगीतों का श्रेणीयन करना।
2. कक्षा–षिक्षण लोकगीतो के माध्यम से षिक्षण अवसरों को जानना।
3. लोकगीतों के माध्यम से जीवन मूल्यों की षिक्षा के अवसरों को जानना।
4. उच्च प्राथमिक स्तर के लिए जीवन मूल्य षिक्षण का प्रारूप प्रस्तुत करना।
5. लोकगीतों के माध्यम से जीवन मूल्यों के षिक्षण में आने वाली बाधाओं तथा उनके निवारण को जानना।

भौगोलिक दृष्टि से

भौगोलिक ज्ञान की दृष्टि से लोकगीतों का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि किसी देष या नगर की विषिष्टता का क्या महत्त्व है। राजस्थानी लोकगीत में इस प्रकार के वर्णन आये भी हैं – बीकानेर से बीज मंगवाया, जोधपुर से नींबू का पौधा, उदयपुर से लहरिया मंगवाया आदि। इन सब में शहर की प्रसिद्धि का वर्णन मिलता है।[20]

ऐतिहासिक दृष्टि से

कुछ लोकगीत ऐतिहासिक होते हैं। उनसे ऐतिहासिक तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है, क्योंकि घटना होने के बाद शीघ्र ही गीत बना होगा, जिससे साधारण लोक भावना की अभिव्यक्ति हुई। अनेक ऐतिहासिक गीतों से साहित्यिक–ऐतिहासिक प्रसिद्ध घटना की प्रामाणिकता जाँची जा सकती है और विभिन्न जातियों के आचार–विचार, धर्म, नीति एवं रीति–रिवाजों का इतिहास विदित होता है।

डॉ. स्वर्णलता ने लोकगीतों के महत्त्व पर बल देते हुए लिखा है,[21] ''गीतों का महत्त्व केवल इसलिए नहीं है क्योंकि पद्य का संगीत, रूप और विषय जीवन के ही अंश है, बल्कि इससे कहीं अधिक इसलिये कि गीतों से विभिन्न युगीन जातियों के इतिहास का अध्ययन हो सकता है।''

सामाजिक दृष्टि से

समाज–विज्ञान का विद्यार्थी अपनी ही दृष्टि से लोकगीत का अध्ययन करता है। वह देखता है कि कहाँ किस आचार–विचार की छाप पड़ी है, कहाँ किस की रीति–नीति प्रतिबिम्बित हो उठी है। जैसा कि चीन के लोकगीतों के विषय में लिखा है कि यहाँ के लोकगीतों में सामाजिक और मार्मिक विष्वासों का पता लगाने की पूर्ण सामग्री प्रस्तुत है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 5, May- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सामाजिक परिस्थितियों की पड़ताल में लोकगीत पग–पग पर हमारा साथ देते हैं। इस प्रकार के अनेक लोकगीत जनता में प्रचलित मिलेंगे, जिनसे सामाजिक रीति–रिवाज, सास–बहू, पति–पत्नी, ननद–भौजाई, देवरानी–जेठानी आदि के भी पारस्परिक व्यवहारों का चित्र हमारे सामने उपस्थित हो जाता है। राजस्थान, पंजाब, गुजरात, कष्मीर और महाराष्ट्र ही नहीं, समस्त प्रान्तों के गीतों में वहाँ की सामाजिक स्थिति का सम्यक दर्षन होता है।[22] सामाजिक उल्लास और सामूहिक क्रम के गीत सामाजिक सत्य की पताका फहरा रहे हैं। षिषु–जन्म पर गाये जाने वाले गीत जाति और वंष की वृद्धि का जय–गान करते हैं तो नई फसल की खुषी में गाये जाने वाले गीतों का लक्ष्य है श्रम को मधुर बनाना और अनाज से भरे हुए कोठारों की कल्पना प्रस्तुत करते हुये जाति के सुख–समृद्धिपूर्ण भविष्य का रंजित चित्र प्रस्तुत करना। ग्रामगीतों का हमारे जीवन से गहरा सम्बन्ध है। इन गीतों में हमारे समाज के प्राचीन गौरव और आदर्ष की भावनाएँ प्रत्यक्ष में दिखाई पड़ती हैं। एक–एक गीत में कितना ऊँचा भाव भरा पड़ा है, यह उन गीतों को अच्छी तरह समझने से ही ज्ञात हो सकता है।

'भात' के गीतों में भाई बहिन का कितना उत्कृष्ट प्रेम है तथा 'भात' भरना भाई का कितना महत्त्वपूर्ण कर्तव्य है – यह भात के गीतों से विदित होता है, जैसे –

'भात भर रोळी, थाळी भर मोती, मेरा भतई नेतन मैं गई जी, बेगी सी बाई मेरा काका रे जाया,
हम पर मेड़ी बाई सकड़ा।[23]

विदेषी विद्वानों ने भी लोकगीतों के सामाजिक महत्त्व पर बल दिया है। लोकगीत मनुष्य की उत्पत्ति, विकास और रीति–रिवाजों की विद्या है। वास्तव में लोकगीतों में व्यंजित आचार–विचार, रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज, धर्म–नीति, विष्वास और मान्यताओं के आधार पर मनुष्य के सामाजिक इतिहास का अध्ययन सर्वाधिक एवं श्रेष्ठ होता है।

सांस्कृतिक दृष्टि से

सांस्कृतिक दृष्टि से हमारे लोकगीत अत्यन्त उपयोगी है। राजस्थानी लोकगीतों में इस प्रांत की प्राचीन संस्कृति का यथार्थ चित्रण इस शाष्वत सत्य का प्रमाण है। इनके सहारे किसी भी देष या समाज की काल के गर्त में खोई हुई मौलिक संस्कृति पुनः प्रकाष में लाई जा सकती है।

आज हम ग्रामगीतो के महत्त्व को स्वीकार करते हैं। 'लोकगीत हमारे विकास के इतिहास की अमूल्य निधि के समान है। जातीय हृदय की उथल–पुथल, सुख–दुख, संयोग–वियोग आदि की भावनाएँ विभिन्न प्रथाओं के गीतो के रूप में व्यक्त हुई हैं। देष का सच्चा इतिहास और उसका नैतिक और सामाजिक आदर्ष इन गीतों में सुरक्षित है।'[24]

हमारे यहाँ ज्ञान आँख से नहीं, कान द्वारा किया गया, बल्कि यह कहना अनुचित न होगा कि सबसे अधिक ज्ञान कान के द्वारा ही दिया गया। हमारे ऋषियों ने ऊँचे–ऊँचे सिद्धान्तों को जनता के जीवन में उतार दिया और फलतः जनता की अभिव्यक्तियाँ ज्ञान से परिपूर्ण होकर लोकगीतों के माध्यम से हमारे कानो तक आईं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 5, May- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

लोकगीतों की विषेषताएँ

लोकगीतों के सामान्य अर्थ की विवेचना करने के उपरान्त उनकी सामान्य विषेषताओं पर दृष्टिपात करना आवष्यक है। रसमयता और उस रसरूपी प्राण–षक्ति के कारण ही लोक–गीतों ने काव्य क्षेत्र में अपना विषेष स्थान प्राप्त कर लिया है। जैसा कि डॉ. लक्ष्मीकमल ने भी कहा है[33] – ''रसपूर्ण संगीतमयता ही मानव जीवन को प्रकाषमान बनाए हुए है। गीतों के बिना मनुष्य का जीवन नीरस और अंधकारमय होता है।''

इदमान्यतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम् यदि शब्दादिदम्
ज्योतिरासीतसंसारं प्रदीयते।[34]

समाज की विभिन्न भावनाओं के सुन्दर चित्र लोक–गीतों में अत्यन्त हृदयमयी होते हैं। यही जीवन–सौन्दर्य की सच्ची कला है, इसी से जीवन–सौन्दर्य की अभिव्यक्ति लोक–साहित्य में विभिन्न रूपों में हुई है। जीवन के अधिक निकट होने से वह प्रत्येक मनुष्य के हृदय की वस्तु हो जाती है।

उपसंहार

लोकगीतों को आगे बढ़ाने के लिए उद्देष्य निर्धारित करने होगे। लोकगीतों के मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ है। हमें उन कठिनाइयों को जानकर उनमें मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करना होगा। लोकगीतों पर अनेक समसामयिक सुझाव प्रस्तुत करने होगें।

लोकगीतों के द्वारा विद्यार्थियों को उनके समाज की कला, संस्कृति, विरासत आदि की षिक्षा प्रदान की जा सकती है। लोकगीतों के लिए भावी षोध संभावनाएं स्थापित करनी होगी। तभी हम प्राथमिक स्तर पर जीवन मूल्य स्थापित कर सकते है। अतः लोकगीतों की अभिव्यक्ति को विद्यार्थियों तक विषयवस्तु या पाठ्यक्रम में समाहित करने का प्रयास करना चाहिए।

xzaFk lwph

1. अरोड़ा, पारस (1992), अंवेर, सांखला प्रिण्टर्स, सुगन निवास, चन्दन सागर, बीकानेर
2. अग्रवाल, श्रीमती प्रेमलता (2007), राजश्री गीतों का संग्रह, अचलेष्वर फ्रेमिंग एण्ड बुकसेलर, जोधपुर
3. अग्रवाल, सरला (2004), हिवडै रो मोह, ज्ञान प्रकाशन मंदिर, 2 ब 5 पवनपुरी, बीकानेर
4. अग्रवाल, स्वर्णलता (1972), राजस्थानी लोक गीत, राजस्थान साहित्य अकादमी, (संगम) उदयपुर
5. आचार्य, वासु (2002), सूको ताल, शषि सदन, डी. 2, मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 5, May- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

6. आलोक मोहन (2003), चिड़ी री बोली लिखौ, रवि प्रकाशन, 78–त्रिवेणी अपार्टमेंट, विकास पुरी, नई दिल्ली–18

7. इन्दा, माधोसिंह (1997), अंतस री पीड़, उषा पब्लिशिंग हाउस, अमरनाथ बिल्डिंग, एम. जी. हॉस्पिटल रोड़, बीकानेर

8. इन्दौरिया, सत्यनारायण (2004), माँ करणी मेहाई, ज्ञान प्रकाषन मन्दिर, 2 ब–5, पवनपुरी, बीकानेर

9. ओमषरण 'विजय' (1994), जवाईचाल्या सासरियै, स्वामी प्रकाषन मन्दिर, 390, हनुमान जी का रास्ता, जयपुर

10. कश्यप, पुष्पलता (2005), यादां रा पंखेरू, पुष्पांजलि भवन, जूनै डाकखाने लारै, लक्ष्मी नगर, जोधपुर

11. कष्यप, पुष्पलता (2002), घर कूंचा घर मंजलां, पुष्पांजलि भवन, पुराने डाकघर के पीछे, लक्ष्मीनगर, जोधपुर

12. कमला 'कमलेश' (2001), वां दनां की बातां, ज्ञान भारती प्रकाशन, 525, कल्पना कुंज छावनी, कोटा

13. कवि कानदान 'कल्पित' (2010), मुरधर म्हारो देस, विकास प्रकाषन, 4–चौधरी क्वाटर्स, स्टेडियम रोड, बीकानेर

14. कविया, शक्तिदान (1991), 'धरती धणी रूपाली', थलवट प्रकाषन (बिराई), जोधपुर

15. कविया, सातदान (2004) राजस्थानी काव्य में सांस्कृतिक गौरव, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाषन, जोधपुर